द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतमि अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

□□□□□□□ : □□□□□□□□□□□ 317-19

□□□□□□□□-परविार में हुई इस असामयकि मृत्□यु ने जबकि हमारा प्रयिजिन हमसे छीन लयिा है तो परमेश्□वर के वचन के प्रकाश में हमें समझना है कि ; **1. □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□:-**

सर्प के बहकावे में आकर जब आदम और हव्□वा ने परमेश्□वर की आज्ञा का उल्□लंघन किया तो परमेश्□वर ने आदम हव्□वा को शाप दयिा□

“

और आदम से उस ने कहा, तू ने जो अपनी पत्नि की बात सुनी, और जसि वृक्ष के फल के वषिय मैं मैंने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलयि भूमि तेरे कारण शापति है

;

तू उसकी उपज जीवन भर दु□ख के साथ खाया करेगा□ और वह तेरे लयि कांटे और ऊंटकटारे उगा□गी, और तू खेत की उपज खा□गा

;

और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्□त में मट्टिी में मलि जा□गा

;

क्□योंकि तू उसी में से नकिला गया है, तू मट्टिी तो है और

मट्टिी ही में फरि मलि जा□गा□

”

(उत्□पत्ति□ 3

:

17-19)

इसलि□ संसार, संसार का वातावरण हमारी देह शापति है और इस शाप का

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

परिणाम मृत्यु के रूप में परमेश्वर के द्वारा निर्धारित है।

2. □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□-

अक्सर इस प्रकार की दुर्घटनाओं के समय हम परमेश्वर से प्रश्न करने लगते हैं कि ऐसा हमारे साथ क्यों हुआ? परन्तु हमें इस बात को समझना है कि हमारे या दूसरों के ग़लत परिणामों के लिए हम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते। नशे की हालत में गाड़ी चलाने के ग़लत निर्णय का परिणाम दुर्घटना हो सकता है और इसके लिए परमेश्वर उत्तरदायी नहीं है। गर्भवती मां के द्वारा ग़लत दवाईं खाने का परिणाम जन्मे बच्चे की अपंगता हो सकता है और इसके लिए हम परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकते। हमें यह समझना है कि हमारे या दूसरों के द्वारा लिए ग़लत निर्णयों के दुष्परिणाम परमेश्वर की योजना अनुसार नहीं।

3. □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□-

उम्र की दीर्घता या अल्पता का मृत्यु से कोई संबंध नहीं है। यह निश्चित नहीं है कि कोई व्यक्ति निर्धारित आयु में ही मृत्यु को प्राप्त होगा। इसी कारण याकूब 4:14 में वचन कहता है

"

सुन तो लो तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम ता मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है।

”

इस कारण हमें यह समझना है कि उम्र का मृत्□यु से कोई संबंध नहीं□

4. □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□-अक्□सर इस प्रकार की असामयकि मृत्□यु के समय हमारे मन में यह प्रश्□न होता है कि ऐसा हमारे साथ क्□यों हुआ? क्□या परमेश्□वर ने हमको दण्□ड दयिा? क्□या परमेश्□वर हमसे प्रेम नहीं करता? और ऐसे समय में अक्□सर हमारा वशि्□वास खो बैठते हैं□ इसी प्रकार का प्रश्□न मार्था ने यीशु से कयिा था “हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई कदापि नहीं मरता□
”

(यूहन्□ना 11:21)

हबक्□कूक ने भी इसी प्रकार से परमेश्□वर से प्रश्□न कयिा था

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

“

हे यहोवा कब तक मैं तेरी दुहाई देता रहूंगा और तू मेरी न सुनेगा?

”

(हबक्कूक 1:2)

परन्तु यीशु ने कहा, “यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।

”

(यूहन्ना 11:40)

हबक्कूक ने जब परमेश्वर पर अपना विश्वास बनाए रखा और उसकी आज्ञा का पालन किया तब

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

वह परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भरकर कहता है "क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जा और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा।
"

(हबक्कूक 3:17-18)

हमें यह समझना है कि हमारे जीवन की त्रासदी को परमेश्वर अपनी योजना को पूर्ण करने का माध्यम बनाता

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

है□ चेलों ने जब □ क जन्म के अन्□ धे को देखकर यीशु से पूछा

“

हे रब्□ बी, किसने पाप किया था कि यह अन्□ धा जन्□ मा, इस मनुष्□ य ने, या उसके माता पिता ने? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इसने पाप किया था

;

न इसके माता पिता ने□ परन्□ तु यह इसलि□ हुआ, कि परमेश्□ वर के काम उसमें प्रकट हों□

”

(यूहन्□ ना 9:2,3)

लाजर की बीमारी और मृत्□ यु भी परमेश्□ वर की योजना का माध्□ यम थी

द्वारा लखिति डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतमि अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

तार्क उसके द्वारा परमेश्□वर को महमिा मलि□ दमोह में प्□लेग की भयानक बीमारी परमेश्□वर योजना का माध्□यम बनी कि जो बच्□चे उस बीमारी में अनाथ होकर बच जा□ं, उनके द्वारा से मसीही कलीसयिा की नींव पड़े□

□□□□□□□□□□□

-

हम इन कठनि पलों में इस बात को समझे कि

;

- हम □कशापति संसार में रहते हैं□

- संसार में घटति हर बात के लि□ हम

द्वारा लिखित डॉ. अजय लाल/ डॉ. इन्□ दु लाल
शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:28 - अंतिम अद्यतन शुक्रवार, 28 मार्च 2008 17:29

परमेश्□ वर को दोषी नहीं ठहरा सकते□

- हमारा मृत्□ यु से कोई संबंध नहीं□

- हमें भरोसा रखना और आज्ञाकारी होना है□

इस कारण से हमें सदैव तैयार रहना है, इस संसार में रहते हुए अपनी आत्□ मा की तैयारी करना है कि चाहे कभी भी मृत्□ यु आए तो हम तैयार हों कि अपनी आत्□ मा परमेश्□ वर के सुरक्षित हाथों में सौंप सकें□